अक्ल और भैंस

फणीश्वरनाथ रेणु

अक्ल
और
भैंस

अक्ल और भैंस

फणीश्वरनाथ रेणु
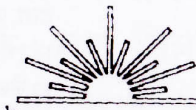
अरुणोदय प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

ISBN : 81-88473-30-8

अरुणोदय प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित
संस्करण : 2018

मूल्य : ₹40.00
सिटी प्रेस, दिल्ली-110095
द्वारा मुद्रित

अरुणोदय प्रकाशन, वाणी प्रकाशन की सहयोगी संस्था

अक्ल और भैंस

जब अखबारों में 'हरी क्रांति' की सफलता और चमत्कार की कहानियाँ बार-बार विस्तार पूर्वक प्रकाशित होने लगीं, तो एक दिन श्री अगमलाल 'अगम' ने भी शहर का मोह त्यागकर, खेती करने का फैसला कर लिया। गाँव में उनके चार-पाँच बीघे जमीन थी, जिसे बटाईदारी पर उठाकर, अगमलालजी 'अगम' आज से सात साल पहले ही गाँव छोड़कर जिला के सदर शहर में आ बसे थे। चूँकि, उनके बाप के साथ उनका 'उपनाम' भी लगा हुआ था, इसलिए शहर के लोगों को यह जानने में देरी नहीं लगी कि 'अगमजी' एक साहित्यिक प्राणी हैं। एक मित्र से किसी वकील की मुहर्रिरी करने की पैरवी करवाई, तो वकील साहब ने उनके उपनामयुक्त नाम पर ही एतराज

किया—'एक ही साथ दो नाम रखना गैरकानूनी है। और जिसका नाम ही गैरकानूनी हो वह कानूनी कारबार कैसे कर सकता है ?'' ...एक सेठजी के घर बच्चों की पढ़ाई का 'टिप्पस' लगाया, तो सेठजी भी उनके नाम और उपनाम से भड़के। पूछा—'क्यों जी ? गाणा-वाणा तो नहीं बजाते हो ?...नहीं जी, हमें ऐसा मास्टर नहीं चाहिए।' चारों ओर से हारकर, आखिर एक दिन 'अगम' जी अपने नाम की कुर्बानी करने को तैयार हो गए। अपने नाम के अतिरिक्त-अंश को कतरकर अलग करना चाहते ही थे कि नौकरी दिला सकनेवाले देवता अचानक प्रसन्न हो गए। एक पुराने प्रेस में 'प्रूफ' देखने की नौकरी मिल गई और तब से अगमलाल 'अगम' अपने अखंड नाम के साथ ही 'प्रूफ' देखते हुए साहित्य-सेवा में संलग्न थे। किंतु, इस 'हरी क्रांति' की हवा ने 'अगम' जी के हृदय को ऐसा हरा बना दिया कि उन्हें चारों ओर हरी-हरी ही सूझने लगी। और, अंततः एक दिन शहर छोड़कर बोरिया-बिस्तर समेत गाँव वापस आ गए।

गाँव के लोगों ने जब 'अगम' जी के ग्राम-प्रत्यागमन का समाचार कारण सहित सुना, तो उन्हें खुशी नहीं—अचरज हुआ। कई निकट के संबंधियों और शुभचिंतकों ने उन्हें नेक से नेक सलाह देकर शहर वापस भेजना चाहा। किंतु 'अगम' जी की आँखों के आगे सदैव 'उन्नत किस्म' के गेहूँ की बालियाँ झूमती रहतीं, 'शंकर मकई' के भूरे-भूरे बाल लहराते रहते। और जब आँखों में नींद आती, तो अपने साथ नये किस्म के उन्नत सपने ले आती—आलू की ढेरी, ऊख के अंबार और हरे चने और मटर की मखमली खेतीवाले सपने !

सो, 'अगम' पर किसी की सलाह का कोई असर नहीं हुआ और वे उत्साहपूर्वक अपने जीवन की 'प्रूफ रीडिंग' यानी भूलों को सुधारने में लग गए।

खेती करने के लिए सबसे पहले हल, बैल और हलवाहे की आवश्यकता होती है। हल और बैल तो खरीद लिए गए, किंतु, हलवाहा की समस्या जटिल प्रतीत हुई। अव्वल तो आजकल गाँव का सबसे निकम्मा आदमी ही हलवाही करता है। निकम्मा अर्थात् जिसे 'घर-घहट', 'छौनी-छप्पर' और 'कोड़-कमान' का कोई 'लूर' नहीं, जो गाड़ी-बैल भी नहीं हाँक सकता—ऐसे 'फूहड़' आदमी के लिए गाँव में हलवाही के सिवा और कोई धंधा नहीं। ऐसे लोग, किसी भी गाँव में, आजकल बहुत पहले से ही चारा-पानी खिलाकर यानी 'अग्रिम पारिश्रमिक' (कर्ज नहीं) देकर, अनुबंधित कर लेते हैं। सो, बहुत खोज-ढूँढ़ करने के बाद, गाँव का सबसे अपाहिज और काहिल पुरुष बिल्लूदास—'अगम' जी की किस्मत में आकर जुटा। बहुत 'खुशामद-दरामद' और प्रलोभन देने के बाद—नित्य सुबह-शाम एक गिलास गर्म चाय पिलाने की शर्त पर बिल्लू महाराज राजी हुए। 'अगम' जी ने सबसे पहले उसके नाम का 'प्रूफ रीडिंग' करके सुधारा—बिल्लूदास नहीं, बिलोमंगल ! बिलोमंगलजी गाँव के सर्वश्रेष्ठ आलसी माने जाते थे। किंतु, 'मुहुरत' के दिन ही 'अगम' जी ने उनको एक गिलास 'औरेंज पिकोदाजिलिंग' चाय पिलाकर उनकी सारी सुस्ती इस तरह दूर कर दी और वे तत्काल ही इतने चुस्त हो गए कि उनके अंग-अंग फिल्मी गीतों पर डोलने लगे। हल जोतते समय जब गाँव के अन्य हलवाहे-मजदूर 'बिरहा-बारहमासा' गाते, तो बिलोमंगलजी के पैर 'मस्तानी महबूबा' के तर्ज पर थिरकते रहते। इसी प्रक्रिया में एक दिन दाहिने बैल के पिछले पैर में 'फाल' लग गया। 'अगम' जी को यह नहीं मालूम था कि हल का फाल भी इतना खतरनाक हो सकता है कि जरा-सा लग जाने पर महीनों तक बैल लँगड़ा होकर बैठा रहे !

खैर, शुभचिंतकों और संबंधियों से बैल और भैंसा माँग करके, 'अगम' जी ने किसी तरह खेतों को तैयार करवाया। कस्बे से रासायनिक खाद

खरीद लाए और 'बीज-वपन' के लिए शुभ दिन देखकर गेहूँ की 'बोआई' हो गई। 'बोआई' के बाद दोनों—अगम और बिलोमंगल—इतने प्रसन्न हुए कि रात-भर मिल-जुलकर—डुएट-भाव से—'मिट्टी में सोना' उपजानेवाले गीत गाते रहे। उसी दिन 'अगम' जी ने अपने शहरी साहित्यिक मित्रों को कई लंबी-लंबी चिट्ठियाँ लिखीं, जिनमें 'नई खेती' के नये अनुभवों के आधार पर उन्होंने घोषित किया कि खेती करने में, कविता और चित्रकारी करने का आनंद, एक ही साथ प्राप्त होता है।

कई दिनों तक स्वामी-सेवक 'बोआई' के आनंद में मग्न रहे। कि, एक दिन सूर्योदय के एक घंटा पहले ही एक शुभचिंतक ने आकर दरवाजा पीटना शुरू कर दिया। सुबह के सुनहले सपने को खोकर 'अगम' जी अत्यंत अप्रसन्न हुए। शुभचिंतकजी को भला-बुरा कहा चाहते थे, किंतु इसके पहले ही शुभचिंतकजी ने सूचना दी, "तुम सोए हो ! जाकर देखो, तुम्हारे खेतों में गेहूँ का एक भी दाना बचा भी है या नहीं।"

अगमजी समझ गए, सुबह-सुबह दिल्लगी करके चाय पीने आया है। वे बोले, "क्यों ? गेहूँ के दाने कहाँ चले जाएँगे ?"

शुभचिंतक बोले, "अरे, जाकर देखो ना—हजारों-हजार कौआ, मैना और दुनिया-भर की चिड़ियों का झुंड तुम्हारे ही खेतों में पड़े हैं। गेहूँ के दाने चुग रहे हैं।"

"क्या सुबह-सुबह दिल्लगी करने आ गए ?" अगमजी ने कहा।

अगमजी ने तकिया के नीचे से 'गेहूँ की सफल खेती' नामक पुस्तिका निकालकर शुभचिंतक के सामने फेंकते हुए कहा, "मुझे इतना उल्लू मत समझना। मैंने गेहूँ की सफल खेती के बारे में

एक-एक शब्द पढ़ लिया है और जहाँ-जहाँ 'प्रूफ' की गलतियाँ थीं, उन्हें शुद्ध भी कर दिया है। समझे ? इस किताब को खोलकर कहीं भी किसी अध्याय की किसी भी पंक्ति में खोजकर निकाल दो कि गेहूँ की 'बोआई' के बाद 'चिड़ियाँ-उड़ाई' भी आवश्यक... ।''

शुभचिंतकजी ने अप्रसन्न होकर जवाब दिया, ''तुम्हारी इस किताब में क्या लिखा है और क्या नहीं लिखा है—यह मैं नहीं जानता। सामने तुम्हारे खेत हैं। जाकर खुद देखते क्यों नहीं कि खेतों में चिड़ियों के कितने अध्याय और कितनी पंक्तियाँ हैं... ।''

'बोआई' के बाद सभी किसानों के हलवाहे-रखवाले सूर्योदय के बहुत पहले ही खेतों पर चले जाते हैं। दुनिया-भर की चिड़ियों की टोलियाँ कचर-पचर करती हुई खेतों में उतरना

चाहती हैं। किंतु, वे पटाखे छोड़कर तथा फटे कनस्तरों को पीट-पीटकर उन्हें उड़ाते रहते हैं—'हा, हा-ए !'

अगमलालजी 'अगम' ने गाँव से बाहर जाकर देखा— सचमुच अद्‍भुत व्यापार ! जो बात किताब के किसी पृष्ठ पर नहीं, वह खेत पर लिखी हुई है—आधुनिक कविता की पंक्तियों की तरह। और, जिस तेजी से उन पखेरुओं के चोंच चल रहे थे, उतनी तेजी से किसी प्रेस में 'ऑटोमैटिक कंपोजिंग' भी नहीं होती होगी। एक ही घंटा में सब गेहूँ चुगकर खत्म कर देंगे !...जी के अंतर से, पूरी शक्ति के साथ बस एक ही शब्द अनायास निकल पड़ा, ''हा—हाय !''

किंतु उनके 'हाय' का कोई खास असर नहीं हुआ और हाथ की तालियों से जब पंछियों के एक पंख भी नहीं फड़के, तो उन्होंने एक ढेला उठाकर फेंका। ढेला खेत में गिरा, तो इधर चरती हुई चिड़ियाँ उड़कर उधर जा बैठीं और चुगने लगीं। अगमजी दौड़कर उस मेंड़ पर गए, तो पंछियों के दल उड़कर दूसरी तरफ बैठ गए। तब

तक बिलोमंगलजी भी सहायता के लिए पहुँच गए थे। अगम जी को राहत मिली। पटाखे या कनस्तर तो थे नहीं, इसलिए दोनों बहुत देर तक इस मेंड़ से उस मेंड़ पर दौड़-दौड़कर 'ढेलेबाजी' करते रहे।

सूरज बाँस भर चढ़ आया और पूस की सुबह का कुहासा तनिक छँटा और चिड़ियों के पेट भर गए तो वे स्वयं ही उड़कर बाँसों तथा पेड़ों की फुनगिनों पर जा बैठीं।

उस दिन लौटकर 'अगम' जी ने 'गेहूँ की सफल खेती' नामक पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ पर नोट लिखा, ''बीज की 'बोआई' के बाद ही, 'चिड़िया-उड़ाई' पर विस्तारपूर्वक एक अध्याय लिखकर पुस्तिका के अगले संस्करण में जोड़ दिया जाए।''

'नोट' लिखने के बाद अगमजी ने बिलोमंगल से कहा, ''कल सूरज उगने से दो घड़ी पहले ही खेत पर एक फूटा कनस्तर लेकर पहुँच जाना।''

''फूटा कनस्तर कहाँ से लावेंगे ?'' बिलोमंगल का सवाल था।

''कनस्तर ?...तुमको कहीं फूटा हुआ कनस्तर भी नहीं मिलेगा ?''

जवाब मिला, ''जी, हमारी नजर में तो कहीं कोई फूटा कनस्तर नहीं पड़ा। आपने कहीं देखा हो तो कहिए, ले आता हूँ।...हाँ, सहुआइन की

दुकान में साबुत कनस्तर जरूर मिल सकता है।''

बिलोमंगल लौटकर एक रुपया में एक कनस्तर उधार ले आए। कनस्तर को अगमजी के कान के पास पीटकर परीक्षा देते हुए कहा, ''देखिए ! एकदम साबुत है।''

कनस्तर की समस्या हल करने के बाद ही बिलोमंगल ने दूसरा सवाल पैदा कर दिया, ''लेकिन, हमसे यह काम नहीं होगा।''

''क्यों ?''

बिलोमंगल ने सर्वप्रथम कारण बतलाया, ''बात यह है बाबू साहेब कि हम ठहरे वैस्नव आदमी। भोरे-भोरे इतने 'प्राणी' के मुँह का आहार छीनने का काम हमसे मत करवाइए।''

अगमलालजी को अचरज हुआ—क्या कहता है यह आदमी ! झुँझलाए, ''तो क्या चिड़िया उड़ाने के लिए दूसरा आदमी रखना होगा ?''

बिलोमंगल ने भी झुँझलाकर जवाब दिया, ''एक तो जाड़े का मौसम ! तिस पर सूरज उगने के दो घड़ी पहले ही उठना। इसके बाद, खेत पर पाँव-पैदल जाना। आजकल सुबह-सुबह ऐसी

कनकनीवाली पछिया हवा चलती है कि देह क्या, जीभ भी सुन्न हो जाती है...''

अंततः सम्मानपूर्ण शर्तिया समझौता हुआ—कल से सूरज उगने के दो घंटा पहले नहीं, एक घंटा पहले बिलोमंगल अगमजी का ऊनी ओवरकोट और 'कनझप्पटोपी' पहनकर, पैरों में काबुली चप्पल डालकर, एक गिलास गरम चाय पीने के बाद—एक बीड़ी सुलगाकर, दूसरी जेब में रखते हुए—कनस्तर लेकर खेत पर पहुँचेगा। वह चिड़ियों को उड़ावेगा नहीं। सिर्फ, 'चल उड़ जा रे पंछी' गीत गाता हुआ, ताल पर कनस्तर बजाया करेगा।

'चिड़िया-उड़ाई' के बाद जब खेत में गेहूँ के पीके फूटे और धीरे-धीरे बढ़े, तब अगमजी को मालूम हुआ कि बिलोमंगल की दाहिनी आँख जन्म से ही दृष्टिहीन है। जिस स्थान पर बैठकर वह नित्य कनस्तर पर ठेका बजाया करता था, उससे दाहिनी ओर से खेतों में बहुत कम पौधे उगे।

अस्तु, पौधे बढ़ने लगे। हरियाली गहरी होती गई और अगमजी दूर होते गए और बिलोमंगलजी

'हरियाली और रास्ता' के गीत गाते रहे। किंतु सिंचाई करने का समय आया तो बिलोमंगलजी फिर अकड़ गए, ''हम हलवाही करने के लिए बहाल हुए हैं, पानी पटाने के लिए नहीं।''

इस बार भी सम्मानपूर्ण समझौता हुआ—बिलोमंगल जलपान करके खेत में जल खींचने के लिए खाली हाथ जाएगा। किंतु, गाँव के किसी किसान से 'झगड़ाकनिया' नहीं करेगा। कोई जोर-जबर्दस्ती करे जब भी नहीं।

पहली सिंचाई के अंतिम दिनों में भी जब अगमजी ने अपने खेतों में धूल उड़ते देखा, तो उनका माथा ठनका। खेतों में जाकर देखा—एक चुल्लू पानी भी किसी दिन नहीं पड़ा है। कारण पूछने पर बिलोमंगलजी के सम्मान को चोट लगी। उन्होंने समझौते की शर्तों का स्मरण दिलाते हुए कहा, ''बाबू साहेब ! यहाँ जो कहावत चालू हो गया है कि 'जो दिखावे मर्दानी—वह पावे पानी।' हम ठहरे हलवाहा आदमी। उधर, गाँव के बड़े-बड़े बाबू किसान खुद पानी के लिए आते हैं। उनसे 'बतकुटी' करके मार खाने कौन जाए ? आप खुद

क्यों नहीं जाते ?''

अंततोगत्वा, अगमजी स्वयं ही सिंचाई के लिए पानी लाने के लिए खेत पर गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा--हर नहर, आहर, छहर और पैन पर गाँव के बड़े-बड़े किसान लाठी और लठैतों के साथ जमे हुए हैं। अगमजी ने जब देखा कि वगैर लाठी और लठैती के पानी पाना असंभव है, तो उन्हें 'सत्याग्रह' की याद आई। उन्होंने ऐलान करके कहा, ''सभी लोग सुन लें। कल से अगर मुझे पानी नहीं लेने दिया गया तो मैं यहीं इसी 'साइफन' पर बैठकर 'आमरण-अनशन' शुरू कर दूँगा।''

लेकिन, नहर-विभाग में 'पार्ट-टाइम' करनेवाले, गाँव के एक किसान नौजवान ने उनकी, आमरण-अनशन-घोषणा को एक ही बात से निस्तेज कर दिया—''आपने तो पानी के लिए 'सट्टा' ही नहीं करवाया है तो पानी कैसे मिलेगा ?''

''सट्टा ?'' यह सुनते ही उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। वे चुपचाप मुँह बाए अपने सहायक

बिलोमंगलजी की ओर देखते रहे। बिलोमंगल ने उनको फिसफिसाकर बताया, ''बाबू साहेब ! यहाँ हर बात में 'पाटीपोलटिस' होता है।''

''पाटीपोलटिस ?''—
अगमजी मुँह बाए ही रहे।

''जी ! गाँव 'दोपाटी' है। 'पुआरी-टोल' पाटी और 'पछियारी-टोल' पाटी। आपका घर दोनों टोले के बीच 'सीवान' पर पड़ता है। आपको लोग न इस टोल की पाटी में समझते हैं, न उस टोल की पाटी में...।''

अगमजी गम खाकर गुमसुम लौट आए। रात-भर उनकी अपनी निर्बलता पर, उनके अपने ही हृदय में ग्लानि और क्षोभ के बादल घुमड़ते

रहे। और अंत में निर्बल के बल रामजी को उन पर ऐसी दया आई कि आसमान में घने काले बादल उमड़ आए और घनघोर वृष्टि शुरू हुई। अपने सहायक को 'बरसात' का गीत गाने के लिए उन्होंने पुरस्कार दिया प्रसन्न होकर। सुबह जाकर देखा कि बगैर 'सट्ट-पट्टा' के ही उनके खेत में भरपूर पानी छलमला रहा है।...पानी रह गया उनका !

पौधे एक बालिश्त-भर और बढ़े तो अगम का हौसला भी डेढ़ हाथ बढ़ा। बढ़ता ही जा रहा था कि एक सुबह को बिलोमंगलजी आकर कोई आवश्यक सूचना देते हुए तुतलाने लगे। बार-बार 'भैंस-भैंस' सुनकर अगमजी ने समझा कि आज

दूधवाले ने दूध नहीं दिया। किंतु, बात दूसरी ही थी और थी भीषण मारात्मक ! रात में गाँव के भैंसवारों ने उनके तीनों खेतों की फसल को चराकर साफ कर दिया।

अगमजी दौड़कर खेत पर गए। वे रोना चाहते थे किंतु रो भी नहीं सके। गाँववालों को कोई अचरज नहीं हुआ। और न किसी ने इस अन्याय के लिए किसी से कुछ कहा बल्कि, ठहरानेवालों ने अगमजी को इसके लिए 'दोषी' ठहराया।... खेत में फसल लगाकर–बेसुध होकर घर में सोने से खेती चरेगी ही।

अगमजी ने अपने सहायक की ओर देखा। बिलोमंगल ने कहा, ''बाबू साहेब ! असल में बात यह है कि 'जिसका काम उसी को साजे, और करे तो डंडा बाजे।' आप ठहरे 'कागत-कलम' वाले आदमी। अगर खेती करना हो तो यहाँ के लोग जैसा करते हैं, जो करते हैं, वह आपको भी करना होगा।...यहाँ 'अकल' से बढ़कर 'भैंस' है। और, क्यों न हो ? भैस का दूध मीठा है। बहुत ताकतवर होता है। और, जब ताकत होगा, तो

लाठी भी मजबूत होगी। जब लाठी मजबूत होगी, तब दूसरे की भैंस भी आप हाँककर अपने बथान पर ला सकते हैं।...और, भैंस तो 'जीप' गाड़ी से भी बढ़कर होती है। रात-बेरात जब जी में आवे, इस पर सवार होकर आप 'बिजूबन-बिजूखंड' में भी जा सकते हैं। न साँप-बिच्छू का डर, न भूत-पिशाच का कोई भय और न बाघ-भालू। कीचड़, पानी, कादी, आसे, पल्ली—सबसे बचाकर, खेत की हर मेंड़ पर ले जाएगी और कोई सवारी ? सोचिए, जरा।''

अगमलालजी ने सोचकर देखा—बिलोमंगल को मान गए। इसलिए, गाँव के कई तथाकथित शुभचिंतकों ने एकांत में आकर जब अमुक-अमुक व्यक्तियों के चरवाहों पर मुकदमा दायर कर देने की गुप्त सलाह दी, तो उन्होंने इंकार कर दिया—कौन देगा उसकी गवाही ? चश्मदीद गवाह कहाँ मिलेंगे ? नहीं- नहीं ! उन्होंने जो करना है, उसका फैसला कर लिया है।

अगमलालजी ने विचार कर देखा—अभी 'मेला-तमाशा' शुरू होनेवाला है। तीन महीने तक

'प्रेस' में खूब ओवरटाइम काम रहता है। उसके बाद ही शुरू हो जाएगा—एलेक्शन का काम। वोटर-लिस्ट छपाई के दिनों दस-पंद्रह रुपए रोज 'ऊपरी आदमनी' हो जाती है...फिर, खेती के नये अनुभवों के आधार पर वह 'गेहूँ की सफल खेती' से भी अच्छी पुस्तिका लिख ले सकते हैं।...इन पैसों को जमा करके अगमजी सबसे पहले एक गुजराती भैंस खरीदेंगे—धर्मगंज के मेले में। इसके बाद, गंगाजी के मेले से बनबाँस की मजबूत लाठी खरीद लावेंगे। तब, कलम को छोड़कर हाथ में लाठी गहेंगे और भैंस चरावेंगे, दूध पीयेंगे, डंड पेलेंगे— लाठी को तेल नहीं—घी पिलाकर लाल बना लेंगे और तब खेती करने के लिए खेत पर उतरेंगे !...अभी शहर लौट जाना ही श्रेयस्कर है।

गाँव छोड़कर पुनः शहर की ओर आने के लिए बिलोमंगलजी ने उनकी यात्रा को 'शुभ' करने के लिए कहा, ''बाबू साहेब ! आपने हमको साल-भर के लिए बहाल किया था। अब आप बीच में ही हमको छोड़कर जा रहे हैं ! क्या यही 'निसाफ' है ?...खैर, आपकी जो मर्जी। मगर, मेरी एक

अरजी है कि आप हमको भी अपने साथ ले चलिए। वहाँ जब आपको काम मिल गया है, तो मेरा भी कहीं-न-नहीं 'डौल' लग जाएगा।...और, कुछ नहीं तो आपके दुश्मनों की 'यात्रा' तो रोज खराब कर ही सकता हूँ।

कहावत है कि काना आदमी सेवक रहे तो मालिक की यात्रा को शुभ और मालिक के दुश्मनों की यात्रा को अशुभ करता है। वैसे आपकी मर्जी !''

अगमजी बिलोमंगलजी के साथ आज ही सुबह की गाड़ी से शहर वापस चले गए।

●●●

मुद्रक : मेहरा ऑफसेट, नई दिल्ली-2